मन्यन्ते=मानते हैं; **माम्**=मुझे; **अबुद्धयः**=बुद्धिहीन मनुष्य; **परम्**=परम; **भावम्**=सत्ता को; **अजानन्तः**=न जानते हुए; **मम**=मेरी; **अव्ययम्**=अविनाशी; **अनुत्तमम्**=परम उत्तम।

अनुवाद

मुझको न जानने वाले बुद्धिहीन मनुष्य समझते हैं कि मैंने यह रूप और व्यक्तित्व धारण किया है। अपने अल्पज्ञान के कारण वे मेरे परम उत्तम अविनाशी स्वरूप को नहीं जानते।।२४।।

तात्पर्य

पूर्वी श्लोकों में देवोपासकों को अल्पज्ञ कहा गया; इसी प्रकार इस श्लोक में निर्विशेषवादियों को बुद्धिहीन कहा है। भगवान् श्रीकृष्ण अपने स्वयंरूप मे यहाँ अर्जुन को अपने वचनामृत का पान करा रहे हैं; पर फिर भी अज्ञानमोहित निर्विशेषवादी तर्क करते हैं कि अन्तिम रूप में परमेश्वर निराकार हैं। श्रीरामानुजाचार्य की परम्परा के महियामय भगवद्भक्त यामुनाचार्य ने इस सन्दर्भ में दो बड़े उपयुक्त श्लोकों की रचना की है। वे कहते हैं, ''प्रभो ! व्यासदेव, नारद आदि भक्त आपको पुरुषोत्तम भगवान् मानते हैं। वैदिक शास्त्रों से आपके स्वरूप-लक्षणों, रूप, लीलामृत आदि का बोध होता है और यह भी जाना जाता है कि आप स्वयं भगवान् हैं। फिर भी रजोगुणी और तमोगुणी अभक्त असुर आपको नहीं समझ पाते, क्योंकि आपके तत्त्व को हृदयंगम करने में वे बिल्कुल असमर्थ हैं। ऐसे अभक्त वेदान्त, उपनिषद् आदि वैदिक शास्त्रों की चर्चा करने में कितने कुशल क्यों न हों, परन्तु आप के स्वयंरूप को नहीं जान सकते।''

'ब्रह्मसंहिता' के अनुसार वेदान्त का स्वाध्याय करने मात्र से भगवत्तत्त्व का ज्ञान होना दुर्लभ है। श्रीभगवान् के निरुपाधिक अनुग्रह के प्रताप से ही उनके स्वरूप का बोध हुआ करता है। अतः इस श्लोक में स्पष्ट कहा है कि देवोपासकों के साथ-साथ, जो वेदान्त तथा वैदिक शास्त्रों के सम्बन्ध में मनोधर्मी करते हैं, वे सच्ची कृष्णभावना से विहीन अभक्त भी अल्पज्ञ हैं। इस श्रेणी के व्यक्ति ईश्वर के नराकार पुरुष स्वरूप को कभी नहीं जान सकते। इसी से परमसत्य को निर्विशेष मानने वालों को असुर कहा है। असुर उसे कहते हैं जो परमसत्य के परमोच्च स्वरूप को नहीं जानता। श्रीमद्भागवत की वाणी है कि परमसत्य की अनुभूति निर्विशेष ब्रह्मरूप से प्रारम्भ होती है; इसके आगे एकदेशीय (अन्तर्यामी) परमात्मा की अनुभूति है। परन्तु परमसत्य की सीमा तो पुरुष रूप श्रीभगवान् ही हैं। आधुनिक निर्विशेषवादी तो और भी अधिक अल्पज्ञ हैं —वे अपने महान् पूर्वगामी शंकराचार्य तक का अनुगमन नहीं करते। शंकराचार्य ने विशेष रूप से श्रीकृष्ण को भगवान् घोषित किया है। पर परम सत्य के तत्त्व को न जानने वाले ये निर्विशेषवादी श्रीकृष्ण को वसुदेव-देवकी का सामान्य पुत्र, राजकुमार अथवा शक्तिशाली जीव बताते हैं। भगवद्गीता में इसकी निन्दा है : ''जो मूर्ख हैं वे मनुष्य ही मुझे साधारण व्यक्ति